लिंग तटस्थता

(Gender Neutrality)

प्रियंका पाराशर (सहायक अध्यापक)
प्राथमिक विद्यालय चन्दपुर बिचपुरी, विकास खण्ड – बिथरी चैनपुर,
जनपद– बरेली, उत्तर प्रदेश

पूर्व स्थिति –

प्रारंभिक समय में यह देखा गया कि समुदाय विशेष के कुछ परिवारों की बेटियाँ विद्यालय के वार्षिकोत्सव, खेलकूद तथा अन्य मंचीय गतिविधियों में भाग नहीं लेती थीं। जब उनसे कारण पूछा जाता, तो वे कहती थीं कि "घर पर मना किया गया है"। ग्रामीण परिवेश में पुरुष सदस्यों की निर्णायक भूमिका और पारंपरिक सोच के कारण समाज में यह धारणा गहराई से बैठी थी कि कुछ कार्य केवल लड़कों के लिए ही उपयुक्त हैं और कुछ केवल लड़कियों के लिए। इसी प्रकार विद्यालय में कई लड़के भी घर के कार्यों जैसे सफाई, सजावट, भोजन परोसने या कक्षा में सहयोग देने जैसे कार्यों में भाग लेने से हिचकिचाते थे। वे इन्हें "लड़कियों के काम" मानते थे और स्वयं को केवल खेल या बाहरी गतिविधियों तक सीमित रखना चाहते थे।

उद्देश्य –

बढ़ती लैंगिक रूढ़िवादिता को समाप्त करके, कम उम्र से ही बच्चों में समावेशी दृष्टिकोण विकसित करना है। यह पहल लैंगिक तटस्थता को बढ़ावा देने और पितृसत्ता के पुराने मानदंडों को तोड़ने का प्रयास है। ग्रामीण परिवेश में यह दिखाने का प्रयास किया गया है कि प्रत्येक बच्चा अपने आप में अद्वितीय है। बच्चों की मानसिकता मेंबदलाव हेतु यह नवाचार किया गया हैं। ताकि बचपन से ही लिंग आधारित पक्षपात उनकी आकांक्षाओं को सीमित न करे। इस प्रयास का उद्देश्य यह बताने का है कि प्रत्येक बच्चा अपने आप में अद्वितीय होता है। उसकी रुचियाँ और प्रतिभाएँ लिंग मानदंडों द्वारा प्रतिबंधित नहीं की जा सकती हैं।

क्रियान्वयन –

इसी मनोवैज्ञानिक पहलू को ध्यान में रखते हुए शिक्षिका ने 'Gender Neutrality' पुस्तक की संरचना की जिसमें विद्यार्थियों के स्वयं की फ़ोटो का प्रयोग किया। पुस्तक की कहानियों और कविताओं के पात्रों के रूप में उन्हीं विद्यार्थियों के वास्तविक चित्र शामिल किए गए।

प्रत्येक प्रातःकालीन प्रार्थना सभा के बाद विद्यालय में बच्चों से इस पुस्तक की एक–एक कविता या कहानी का पठन (Reading) कराया गया। शिक्षिका ने बच्चों के अभिभावकों को विद्यालय में आमंत्रित किया और उनके सामने विद्यार्थियों द्वारा 'Gender Neutrality Book' की कविताओं का पठन–पाठन और प्रस्तुतीकरण करवाया, साथ ही उन्हें वह पुस्तक भी दिखाई गई। जिसमें उनके स्वयं के बच्चों के चित्रों और फ़ोटो का प्रयोग किया गया था। अभिभावक जब अपने बच्चों की तस्वीरें और उनकी सहभागिता देखकर गर्वित हुए, तो यह संदेश और भी गहराई से पहुँचा कि प्रत्येक बच्चा अपने आप में अद्वितीय (Unique) है। शिक्षिका ने उन्हें समझाया कि किसी भी बच्चे की प्रतिभा या क्षमता को लिंग आधारित मानकों द्वारा सीमित नहीं किया जा सकता।

विद्यालय ने न केवल बच्चों में बल्कि अभिभावकों और समुदाय में भी लैंगिक समानता की चेतना विकसित करने का प्रयास किया। यह पहल विद्यालय और समाज के बीच साझी जिम्मेदारी (Shared Responsibility) की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम सिद्ध हुई, जिसने "Gender Neutrality" की अवधारणा को जमीनी स्तर तक पहुँचाया।

उदाहरण के लिए – एक कविता में पिता जी को रसोई में खाना बनाते और माँ को अखबार पढ़ते व पिता जी को चाय बनवाते हुए दिखाया गया। दूसरी गतिविधि में लड़कों को घर के कार्य करते हुए तथा लड़कियों को रोबोट और स्पोर्ट्स कार से खेलते हुए दिखाया गया। एक कहानी में यह संदेश दिया गया कि हर बच्चा अपनी रुचियों और क्षमताओं के अनुसार कोई भी करियर चुन सकता है– जैसे लड़की इंजीनियर, ड्राइवर या पायलट बन सकती है, और लड़का नर्स, शिक्षक या फैशन डिजाइनर बन सकता है। इन सभी उदाहरणों के माध्यम से यह स्पष्ट किया गया कि किसी भी कार्य या भूमिका को लिंग के आधार पर सीमित नहीं किया जाना चाहिए। पुस्तक की गतिविधि "निशाना लगाओ" के माध्यम से बच्चों ने विभिन्न क्षेत्रों– खेल, विज्ञान, व्यापार, पुलिस, राजनीति, समाजसेवा आदि– में महिलाओं और पुरुषों दोनों के योगदान को पहचाना। साथ ही ट्रांसजेंडर शख्सियतों, जैसे मध्यप्रदेश की पूर्व विधायक शबनम मौसी, एवं दिव्यांग वैज्ञानिक स्टीफन हॉकिंग के जीवन चित्रों के माध्यम से यह प्रेरक संदेश दिया गया कि हर व्यक्ति, चाहे उसका लिंग या शारीरिक अवस्था कुछ भी हो, समाज के लिए समान रूप से महत्वपूर्ण है। इस प्रकार, संतुलित और बच्चों से जुड़ी सामग्री के माध्यम से उनके मन से पारंपरिक लैंगिक रूढ़िवादिताएँ मिटाने, तथा सम्मान, सहयोग और समानता की भावना विकसित करने का प्रयास किया गया।

यह पुस्तक "Teach Them Early" की अवधारणा पर आधारित थी, जो बचपन से ही समानता और समावेशिता की नींव रखती है।

प्रभाव –

इस पुस्तक के माध्यम से बच्चों के मन से पारंपरिक लैंगिक रूढ़िवादिताएँ (Gender Stereotypes) टूटीं और उन्होंने पारंपरिक लिंग भूमिकाओं व सामाजिक रूढ़िवादी मान्यताओं को खुलकर चुनौती दी। लड़कियाँ अब विद्यालय के नृत्य, खेल, वाद–विवाद और अन्य मंचीय गतिविधियों में सक्रिय रूप से भाग लेने लगीं, वहीं लड़के भी सफाई, सजावट और सहयोगात्मक कार्यों में उत्साहपूर्वक सहभागी बने। कविताओं, कहानियों और खेल–आधारित गतिविधियों ने बच्चों में संवेदनशीलता, समानता, सहयोग और आत्मविश्वास की भावना को गहराई से स्थापित किया।

अभिभावक अपने बच्चों की प्रस्तुति देखकर गर्व और भावनात्मक जुड़ाव महसूस करने लगे।उनमें यह सोच विकसित हुई कि हर बच्चा अपने आप में अद्वितीय (Unique) है और उसकी प्रतिभा लिंग आधारित सीमाओं से परे है। उन्होंने यह समझा कि Gender Stereotypes कोई जन्मजात विचार नहीं, बल्कि समाजीकरण की प्रक्रिया से विकसित धारणा है, जिसे सही शिक्षा द्वारा प्रारंभिक अवस्था में ही बदला जा सकता है।

विद्यालय का वातावरण पहले से अधिक समावेशी, प्रेरणादायक और सहयोगपूर्ण बन गया।बच्चों में पारंपरिक लैंगिक भेदभाव टूटने लगा और उनका चिंतन व्यापक तथा संतुलित हुआ।एक ऐसा वातावरण विकसित हुआ जहाँ लिंग किसी के अवसरों या सीमाओं का निर्धारण नहीं करता, बल्कि सभी को समान रूप से आगे बढ़ने का अवसर प्रदान करता है।विद्यालय ने Gender Neutral Learning Environment का उत्कृष्ट उदाहरण प्रस्तुत किया, जिससे अन्य शिक्षकों और विद्यालयों ने भी प्रेरणा ली।